"शिक्षा मनौविज्ञान का बढ़ता ग्राफः एक विश्लेषणात्मक अध्ययन (राजस्थान के करौली जिले के सन्दर्भ में)"

मनेन्द्र कुमार लहकोडिया

प्रवक्ता, वीणा मैमोरियल कॉलेज ऑफ एजूकेशन, पदेवा करौली (राज.)

मनोज कुमार शर्मा

शोधार्थी, मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय, उदयपुर (राज.)

एवं प्रवक्ता वीणा मैमोरियल कॉलेज ऑफ एजूकेशन, पदेवा करौली (राज.)

शिक्षा मनोविज्ञान का अर्थ

(Meaning of Educational Psychology)

शिक्षा मनोविज्ञान, मनोविज्ञान की एक अत्यंत महत्वपूर्ण शाखा है। शिक्षा मनोविज्ञान दो शब्दों के संयोग से बना है- शिक्षा तथा मनोविज्ञान। अतः शिक्षा मनोविज्ञान शब्द का शाब्दिक अर्थ निःसन्देह शिक्षा से सम्बन्धित मनोविज्ञान से है। शिक्षा का सम्बन्ध मानव व्यवहार के परिमार्जन से होता है, जबकि मनोविज्ञान का सम्बन्ध व्यवहार के अध्ययन से होता है। मानव व्यवहार के परिमार्जन के लिए मानव व्यवहार का अध्ययन करने की आवश्यकता होती है।

मानव व्यवहार को उन्नत बनाने की दृष्टि से जव व्यवहार का अध्ययन किया जाता है तो अध्ययन की इस शाखा को शिक्षा मनोविज्ञान के नाम से सम्बोधित किया जाता है। अतः कहा जाता है कि शिक्षा मनोविज्ञान शैक्षणिक परिस्थितियों में मानव व्यवहार का अध्ययन करता है। दूसरे शब्दों में शैक्षिक समस्याओं का वैज्ञानिक' व तर्कसंगत ढंग से समाधान करने के लिए मनोविज्ञान के आधारभूत सिद्धान्तों का उपयोग करना ही शिक्षा मनोविज्ञान की विषयवस्तु है।

आधुनिक शिक्षा जगत में शिक्षा मनोविज्ञान का एक अत्यधिक महत्वपूर्ण स्थान है। शिक्षा मनोविज्ञान का प्रारम्भ कब हुआ, इस सम्बन्ध में विद्वानों में कुछ मतभेद अवश्य है। कुछ मनोवैज्ञानिक शिक्षा मनोविज्ञान का प्रारम्भ 19वीं शताब्दी से स्वीकार करते हैं, जबकि कुछ

शिक्षा मनोविज्ञान का प्रारम्भ प्लेटो व अरस्तू जैसे प्राचीन यूनानी दार्शनिकों के समय से ही स्वीकार करते हैं।

कॉलसनिक (Kolesnik) ने शिक्षा मनोविज्ञान के अध्ययन का प्रारम्भ ईसा से पांच शताब्दी पूर्व (500BC) के यूनानी दार्शनिकों से माना है। उसके अनुसार मनोविज्ञान और शिक्षा के सर्वप्रथम व्यवस्थित सिद्धान्तों में से एक सिद्धान्त प्लेटो का भी था। परन्तु स्किनर (Skinner) ने शिक्षा मनोविज्ञान का प्रारम्भ प्लेटो शिष्य अरस्तू से माना है।

निःसंदेह प्लेटो और अरस्तू आदि यूनानी दार्शनिकों ने शिक्षा सम्बन्धी सिद्धान्तों का प्रतिपादन करते हुए इन सिद्धान्तों को तत्कालीन मनोविज्ञान से जोड़ने की कोशिश की थी, परन्तु आधुनिक शिक्षा मनोविज्ञान की उत्पत्ति 19वीं शताब्दी में पेस्तालॉजी (Pestalozzi), हर्बार्ट (Herbart) तथा फ्रॉबेल (Froebel) आदि यूरोपियन शिक्षा दार्शनिकों के कार्यों से हुई है। जिन्होंने शिक्षा का मनोवैज्ञानिक प्रयास किया। वास्तव में शिक्षा में मनोवैज्ञानिक आंदोलन का सूत्रपात रूसो (Rousseau) की प्रकृतिवादी

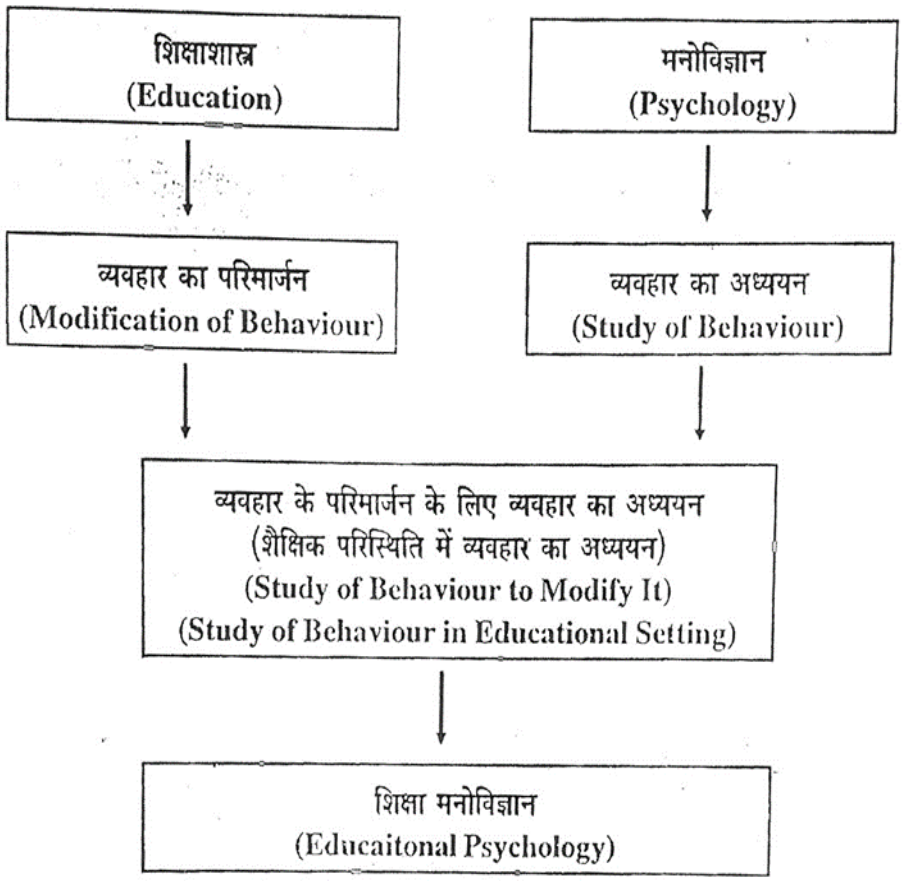

शिक्षा तथा मनोविज्ञान में सम्बन्ध

(Relationship between Education and Psychology)

विचारधारा से ही सम्भव हुआ। उसने शिक्षाशास्त्रियों का ध्यान वालक की ओर आकर्षित करते हुए इस बात पर बल दिया कि वालकों को उनकी रुचियों, प्रवृत्तियों, योग्यताओं तथा अवस्थाओं के अनुरूप ही शिक्षा दी जानी चाहिए। रूसो की इस विचारधारा से प्रेरणा पाकर ही पेस्तालाजी, हर्वार्ट, फ्रॉवेल आदि ने शिक्षा के क्षेत्र में मनोविज्ञान का विधिवत् उपयोग करके तत्कालीन शिक्षा प्रणाली में अनेक सुधार किए। तत्पश्चात् गाल्टन **(Galton)**] इविंगहॉस **(Ebbinghous)**] जेम्स **(James)**] विने **(Binet)**] गोडार्ड **(Goddard)**आदि मनोवैज्ञानिकों ने अनेक ऐसे मनोवैज्ञानिक सिद्धान्तों का प्रतिपादन किया जिन्होंने शिक्षा के क्षेत्र में क्रांति खड़ी कर दी।

बीसवीं शताब्दी के प्रारम्भ में शिक्षा मनोविज्ञान मनोविज्ञान की एक स्पष्ट शाखा के रूप में विकसित होने लगा। थार्नडाइक **(horndike)**को प्रथम शैक्षिक मनोवैज्ञानिक कहा जाता है। जॉन डीवी **(John Dewey)** नामक अमेरिकी शिक्षाशास्त्री ने शिक्षा के क्षेत्र में महत्वपूर्ण मनोवैज्ञानिक चिन्तन किया। शिक्षा प्रक्रिया पर मनोवैज्ञानिक प्रत्ययों व निष्कर्षों का अविस्मरणीय प्रभाव डाला। अमेरिका की नेशनल सोसाइटी ऑफ कॉलिज टीचर्स ऑफ ऐजूकेशन **(National Society of College Teachers of Education)**ने शिक्षा मनोविज्ञान के कार्यों को आगे बढ़ाने में महत्वपूर्ण योगदान दिया।

परिणामतः वर्तमान समय में शिक्षा मनोविज्ञान को एक स्वतंत्र विषय **(Independent Discipline)** के रूप मैं स्वीकार किया जाता है। शिक्षा मनोविज्ञान वास्तव में क्या है ? इस प्रश्न का उत्तर विभिन्न मनोवैज्ञानिकों तथा शिक्षाशास्त्रियों के द्वारा शिक्षा मनोविज्ञान के सम्बन्ध में व्यक्त किए गए विचारों के अध्ययन से स्पष्ट हो सकेगा। शिक्षा मनोविज्ञान के सम्बन्ध में विद्वानों के द्वारा व्यक्त की गई कुछ परिभाषाएँ निम्नवत् हैं-

कॉलसनिक के अनुसार-

"मनोविज्ञान के सिद्धान्तों व परिणामों का शिक्षा के क्षेत्र में अनुप्रयोग शिक्षा मनोविज्ञान है।"

Educational Psychology is the application of findings and theories of ps the field of education-

W.B. Kolesnik

क्रो एवं क्रो के शब्दों में-

"शिक्षा मनोविज्ञान व्यक्ति के जन्म से लेकर वृद्धावस्था तक के सीखने के अनुभवों की व्याख्या करता है।'

Educational psychology describes and eÛplains the learning eÛperiences of a individual from birth through old age-

Crow and Crow

स्किनर के अनुसार -

"शिक्षा मनोविज्ञान मनोविज्ञान की वह शाखा है जो शिक्षण तथा अधिगम से सम्बन्धित होती है।"

Educational psychology is that branch of psychology which deals with teaching and learning-

B-F- Skinner

ट्रो के अनुसार-

"शिक्षा मनोविज्ञान शैक्षिक परिस्थितियों के मनोवैज्ञानिक पक्ष का अध्ययन है।"

Educational Psychology is the study of the psychological aspects of educational situations-

Trow

स्टीफन के अनुसार-

"शिक्षा मनोविज्ञान शैक्षिक विकास का क्रमवद्ध अध्ययन है।"

Educational Psychology is a systematic study of educational growth-

J.M. Stephon

"शिक्षा मनोविज्ञान की उपरोक्त परिभाषाओं के अवलोकन से स्पष्ट है कि शिक्षा मनोविज्ञान शैक्षिक परिस्थितियों में मानव व्यवहार का अध्ययन करता है। दूसरे शब्दों में शिक्षा विज्ञान विज्ञान की वह शाखा है जो शिक्षा प्रक्रिया का संचालन करने को दृष्टि से वैज्ञानिक सिद्धान्तों तथा नियनों का अध्ययन करती है। शिक्षा मनोविज्ञान की उपरोक्त वर्णित परिभाषाओं से शिक्षा मनोविज्ञान की निम्नांकित विशेषतायें परिलक्षित होती है-

1.शिक्षा मनोविज्ञान का मुख्य केन्द्र मानव व्यवहार है।

2.शिक्षा मनोविज्ञान सैनिक परिस्थिति में व्यवहार का अध्ययन करता है।

3.शिक्षा मनोविज्ञान शिक्षा प्रक्रिया को तरल, सुगम तथा द्रुत बनाकर शिक्षण-अधिगम का मार्ग प्रशस्त करता है।

4.शिक्षा मनोविज्ञान के अन्तर्गत सामान्य मनोविज्ञान के मूलभूत सिद्धान्तों तथा विधियों का उपयोग किया जाता है।

5.शिक्षा मनोविज्ञान की प्रकृति वैज्ञानिक है अर्थात शिक्षा मनोविज्ञान अपने अध्ययन के लिए वैज्ञानिक विधियों का प्रयोग करता है।

शिक्षा मनोविज्ञान का कार्य क्षेत्र

(Scope of Educational Psychology)

शिक्षा मनोविज्ञान के अर्थ तथा उसके उद्देश्य से स्पष्ट है कि शिक्षा मनोविज्ञान शिक्षार्थी **(Learner)** अध्यापक **(Teacher)** तथा शिक्षण-अधिकतम प्रक्रिया **(Teaching-Learning Process)** का मनोवैज्ञानिक अध्ययन करती है।

शिक्षा मनोविज्ञान के क्षेत्र को स्पष्ट करते हुए स्किनर ने लिखा है। कि इसमें सभी ज्ञान तथा प्रविधियाँ सम्मिलित हैं जो सीखने की प्रक्रिया से समझने तथा अधिक निपुणता से निर्देशित करने से सम्बन्धित हैं। आधुनिक शिक्षा मनोविज्ञान के प्रमुख कार्यक्षेत्र निम्नवत हैं।

1.वंशानुक्रम (Heredity) वंशानुक्रम व्यक्ति की जन्मजात योग्यताओं से सम्बन्धि व्यक्ति के वंशानुक्रम में वे समस्त शारीरिक, मानसिक तथा अन्य विशेषतायें आ जाती हैं। माता-पिता अथवा अन्य पूर्वजों से (जन्म के समय नहीं वरन्) जन्म से लगभग नौ माह पूर्व मनोवैज्ञानिकों ने सिद्ध कर दिया है कि बालक के विकास के प्रत्येक पक्ष पर उसके वंशानुक्रम पड़ता है। शारीरिक संरचना, मूल प्रवृत्तियाँ, मानसिक योग्यता, व्यावसायिक क्षमता आदि पर वंशानुक्रम का प्रभाव स्पष्ट रूप से परिलक्षित होता है। शैक्षिक विकास की दृष्टि से वंशानुक्रम का अध्ययन करना अत्यधिक महत्वपूर्ण है। वंशानुक्रम के ज्ञान के आधार पर अध्यापक अपने छात्रों का वांछित विकास कर सकता है।

2.विकास (Development) शिक्षा मनोविज्ञान के अंतर्गत तरूणावस्था से लेकर मृत्युपर्यन्त होने वाले मानव के विकास का अध्ययन किया जाता है। मानव जीवन का प्रारम्भ किस प्रकार से होता है तथा जन्म के उपरान्त विभिन्न अवस्थाओं शैशवावस्था, वाल्यावस्था, किशोरावस्था तथा प्रौढ़ावस्था में शारीरिक, मानसिक, सामाजिक, संवेगात्मक आदि पक्षों में क्या-क्या परिवर्तन होते हैं। इसका अध्ययन करना शिक्षा मनोविज्ञान का एक महत्वपूर्ण विषय क्षेत्र है। वालकों की विभिन्न अवस्थाओं में होने वाले विकास के ज्ञान से उनकी सामर्थ्य तथा क्षमता के अनुरूप शिक्षा प्रदान करने में महत्वपूर्ण योगदान मिलता है।

3.यक्तिगत मित्रता (Individual Differences) संसार में कोई भी दो व्यक्ति एक दूसरे के पूर्णतया समान नहीं होते हैं। शारीरिक, सामाजिक व मानसिक आदि गुणों में व्यक्ति एक दूसरे से पर्याप्त भिन्न होते हैं। अध्यापक को अपनी कक्षा में ऐसे छात्रों का सामना करना होता है जो परस्पर काफी भिन्न होते हैं। व्यक्तिगत विभिन्नताओं के ज्ञान की सहायता से अध्यापक अपने शिक्षण कार्य को सम्पूर्ण कक्षा की आवश्यकताओं तथा योग्यताओं के अनुरूप व्यवस्थित कर सकता है ।

4.व्यक्तित्व (Personality) शिक्षा मनोविज्ञान मानव के व्यक्तित्व तथा उससे सम्बन्धित विभिन्न समस्याओं का भी अध्ययन करता है। मनोविज्ञान ने यह सिद्ध कर दिया है कि मानव के विकास तथा उसकी शिक्षा में व्यक्तित्व की भी महत्वपूर्ण भूमिका होती है। शिक्षा का उद्देश्य बालक का सर्वांगीण विकास करना है। अतः वालक के व्यक्तित्व का संतुलित विकास करना शिक्षा का एक महत्वपूर्ण उत्तरदायित्व हो जाता है। मनोविज्ञान व्यक्तित्व की प्रकृति, प्रकारों, सिद्धान्तों का ज्ञान प्रदान करके संतुलित व्यक्तित्व के विकास की विधियां

बताता है। अतः शिक्षा मनोविज्ञान का एक कार्यक्षेत्र व्यक्तित्व का अध्ययन करके वालक के व्यक्तित्व के सर्वांगीण विकास का मार्ग प्रशस्त करना भी है।

5.अपवादात्मक बालक (Exceptional Child) शिक्षा मनोविज्ञान अपवादात्मक बालकों के लिए विशेष प्रकार की शिक्षा व्यवस्था का आग्रह करता है। वास्तव में तीव्र बुद्धि या मन्द बुद्धि वालकों तथा गूँगे, बहरे, अंधे वालकों के द्वारा सामान्य शिक्षा का समान लाभ उठाने की कल्पना करना त्रुटिपूर्ण ही होगा। ऐसे बालकों के लिए इनकी विशिष्ट आवश्यकताओं के अनुरूप शिक्षा व्यवस्था का आयोजन करना होता है। शिक्षा मनोविज्ञान इस कार्य में महत्वपूर्ण योगदान करता है।

6.अधिगम प्रक्रिया (Learning Process) शिक्षा प्रक्रिया का प्रमुख आधार अधिगम है। सीखने के अभाव में शिक्षा की कल्पना भी नहीं जा सकती। शिक्षा मनोविज्ञान सीखने के नियमों, सिद्धान्तों तथा विधियों का ज्ञान प्रदान करता है। प्रभावशाली शिक्षण के लिए यह आवश्यक है कि अध्यापक सीखने की प्रकृति, सिद्धान्त, विधियों के ज्ञान के साथ-साथ सीखने में आने वाली कठिनाइयों को समझे एवं उनको दूर करने के विभिन्न उपायों से भी भलीभांति परिचित हो । सीखने का स्थानान्तरण कैसे होता है? तथा शैक्षिक दृष्टि से इसका क्या महत्व है? यह जानना भी अध्यापक के लिए उपयोगी होता है। इन सभी प्रकरणों की चर्चा शिक्षा मनोविज्ञान करता है।

7.पाठ्यक्रम निर्माण (Curriculum Development) वर्तमान समय में पाठ्यक्रम को शिक्षा प्रक्रिया का एक जीवन्त अंग स्वीकार किया जाता है। पाठ्यक्रम निर्माण में मनोवैज्ञानिक सिद्धान्तों का प्रयोग किया जाता है। विभिन्न स्तरों के बालक व बालिकाओं की आवश्यकताएँ, विकासात्मक विशेषताएँ, अधिगम शैली आदि भिन्न-भिन्न होती हैं। पाठ्यक्रम निर्माण के समय इन सभी को ध्यान रखना अत्यंत आवश्यक तथा महत्त्वपूर्ण होता है।

8.मानसिक स्वास्थ्य (Mental Health) अध्यापकों तथा छात्रों के मानसिक स्वास्थ्य का शैक्षिक दृष्टि से विशेष महत्व है। जब तक अध्यापक तथा छात्रगण मानसिक दृष्टि से स्वस्थ तथा प्रफुल्लित नहीं होंगे, तब तक प्रभावशाली अधिगम सम्भव नहीं है। मनोविज्ञान मानसिक स्वास्थ्य को प्रभावित करने वाले कारकों का ज्ञान प्रदान करता है तथा कुसमायोजन से बचने के उपायों को खोजता है।

9.शिक्षण विधियाँ (Teaching Methods) -शिक्षण का अभिप्राय छात्रों के सम्मुख ज्ञान को प्रस्तुत करना मात्र नहीं है। प्रभावशाली शिक्षण के लिए यह आवश्यक है कि छात्र प्रभावशाली ढंग से ज्ञान ग्रहण करने में समर्थ हो सके। शिक्षा मनोविज्ञान बताता है कि जब तक छात्रों को पढ़ने के प्रति अभिप्रेरित नहीं किया जायेगा, तब तक अध्यापन में सफलता मिलना संदिग्ध होगा। यह भी स्मरणीय होगा कि सभी स्तर के बालकों के लिए अथवा सभी विषयों के लिए कोई एक सर्वोत्तम शिक्षण विधि सम्भव नहीं होती है। शिक्षा मनोविज्ञान प्रभावशाली शिक्षण के लिए उपयुक्त शिक्षण विधियों का ज्ञान प्रदान करता है ।

10.निर्देशन व समुपदेशन (Guidance and Counselling) शिक्षा एक अत्यंत व्यापक तथा बहु-आयामी प्रक्रिया है। समय-समय पर छात्रों को तथा अन्य व्यक्तियों को शैक्षिक व्यक्तिगत तथा व्यावसायिक निर्देशन व परामर्श प्रदान करना अत्यंत आवश्यक है। छात्रों को किस पाठ्यक्रम में प्रवेश लेना चाहिए, किस व्यवसाय में वे अधिकतम सफलता अर्जित कर सकते हैं। उनकी समस्याओं का समाधान कैसे हो सकता है - जैसे प्रश्नों का उत्तर शिक्षा मनोविज्ञान ही प्रदान कर पाता है।

11.मापन तथा मूल्यांकन (Measurement and Evaluation)- छात्रों की विभिन्न योग्यताओं, रुचियों तथा उपलब्धियों का मापन व मूल्यांकन करना अत्यन्त महत्वपूर्ण तथा आवश्यक होता है। मापन तथा मूल्यांकन की सहायता से एक ओर जहाँ छात्रों की सामर्थ्य, रुचियों तथा परिस्थितियों का ज्ञान होता है, वहीं दूसरी ओर शिक्षण-अधिगम की सफलता

असफलता का ज्ञान भी प्राप्त होता है। शिक्षा मनोविज्ञान के अध्ययनों में छात्रों की योग्यताओं तथा उपलब्धियों का मापन व मूल्यांकन करने वाले विभिन्न उपकरण बहुतायत से प्रयुक्त किए जाते हैं।

उपरोक्त शोधकार्य से स्पष्ट है कि शिक्षा मनोविज्ञान का क्षेत्र अत्यंत विस्तृत है तथा इसमें मनोविज्ञान से सम्बन्धित उन समस्त बातों का अध्ययन किया जाता है जो शिक्षा प्रक्रिया का नियोजन करने, संचालन करने तथा परिमार्जन करने की दृष्टि से उपयोगी हो सकती है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूचीः

1.राय, पारसनाथ 2011 ''शैक्षिक अनुसंधान: एक परिचय'' जयपुर (राजस्थान) लक्ष्मी नारायण प्रकाशन।

2.बेस्ट, जॉन डब्ल्यू 2011 'रिसर्च इन एजूकेशन' यू.एस.ए. (अमेरिका) ऐमिल बुक्स प्रकाशन।

3.अस्याना, विपिन, 2012 'मनौविज्ञान और षिक्षा में मापन एवं मूल्यांकन' वाराणसी (उत्तरप्रदेश) विजय प्रकाशन।

4.कारलिंगर, एफ.एन. 2012 'फाउण्डेशन ऑफ बिहैवरियल रिसर्च' न्यूयार्क (उ. अमेरिका) सेन्युरी क्राफ्ट प्रकाशन।

5.मंगल अंष्क, बरौलिया, 2012 'शैक्षिक अनुसंधान की विधियों एवं शैक्षिक सांख्कीय' आगरा (उत्तरप्रदेश) राधा प्रकाशन मन्दिर।

6.महेश, भार्गव 2012 'मनौवैज्ञानिक परीक्षण एवं मापन' आगरा (उत्तरप्रदेश) हरिप्रसाद बुक हाउस, शैक्षिकप्रकाशन

7.श्री वास्तव, डी.एन. 2013 मनोविज्ञान और षिक्षा में सांख्यिकीय विधियॉ' 16वां संस्करण, आगरा (उत्तरप्रदेश) विनोद प्रकाशन।

8.मिश्र, करूणाशंकर, 2013 'भारतीय शिक्षा की समसामविक समस्याएँ आगरा (उत्तरप्रदेश) विनोद प्रकाशन।